अध्याय–3

भारत के लोकनृत्य

हम जिस परिवेश में रहते है उसे लोक कह सकते हैं। इस प्रकार लोक में उसके निवासी जन तथा उनका परिवेश, आचार-विचार, विश्वास, रीति रिवाज, परंपरायें तथा उन परंपराओं की अभिव्यक्ति भी सम्मिलित है। हम जिस समाज में रहते हैं हमारे लोकनृत्य में इसकी गति चिन्तन और मानसिकता परिलक्षित होती, दिखती है। इस पाठ में भारत जहाँ विभिन्नता में एकता है यहाँ विभिन्न राज्यों के लोकनृत्य के विषय में जानकारी दी जा रही हैं–

(1) हम हिमाचल प्रदेश की ओर चले तो देखेगें कि इस क्षेत्र का नृत्य —

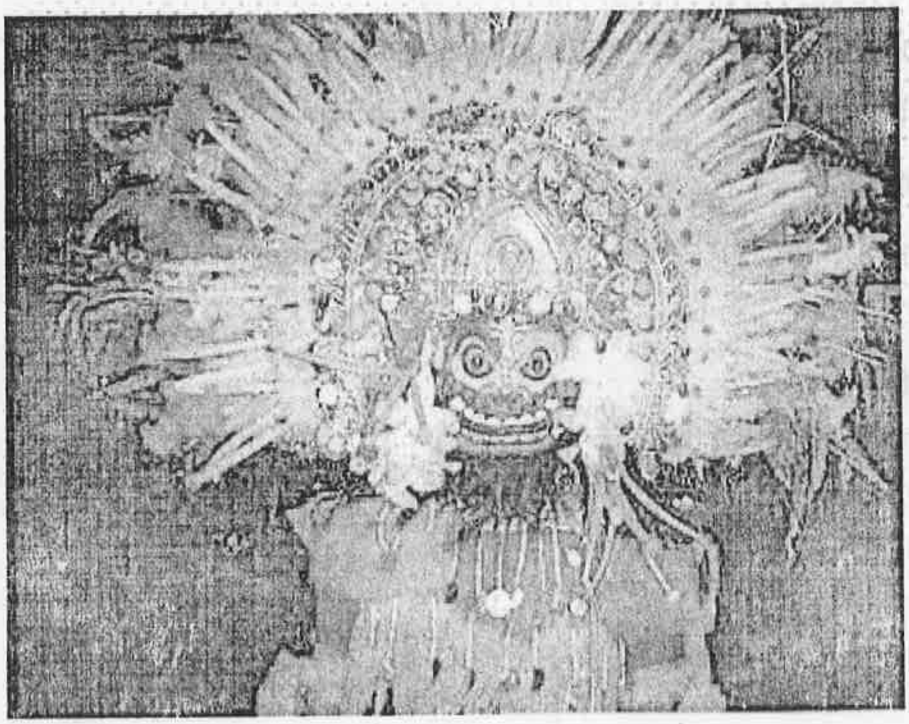

(क) **राक्षस-नृत्य छम्म**–किन्नर क्षेत्र में पारंपरिक लामाओ तथा देवताओं के नृत्य को और राक्षस से संबंधित नृत्य को मुखौटा लगाकर करते हैं ये नर्त्तक लम्बी छंलाग लगाते है जिस कारण इन्हे हिरण नर्त्तक भी कहते हैं। नर्त्तकों की संख्या जोड़े में न होकर फूट में होती है। जैसे 3, 5, 7, 9, 11, छम्मनृत्य केवल लामा ही करते हैं। यह नृत्य भांगड़े नृत्य जैसा लगता है।

(ख) **डलशोन तथा चोल्लबा नृत्य**–यह बड़ा ही रोचक होता है। इसमें बाव के चमड़ी में भूसा भरकर तथा उसकी नाक में सोने का आभूषण डालकर नृत्य कराया जाता है।

(ग) **नागस कायड़** –इस नृत्य नर्तकों की संख्या अधिक होती है तथा टेढ़ी-मेढ़ी पक्तियां होती सर्पिल तरीके से घूम-घूम कर नृत्य करते हैं। हिमाचल प्रदेश के नृत्यों में आदिम तथा वनैले जीवन के अनेक दृश्य देखने को मिलते हैं।

(2) उत्तरांचल के पर्वतीय भूभाग अत्यन्त रमणीय एवं पूर्ण हिमालय की संस्कृति से ओत-प्रोत है। यहाँ वीर रस की भी प्रधानता नृत्य में देखने को मिलती है। साथ ही यहाँ शृंगार रस भी प्रधान है–यहाँ के प्रमुख नृत्य है–

(क) झोड़ा **(ख) चोंचरी**

नर्तक तलवार, ढाल लिये नृत्य करते हैं साथ ही वाद्यों में तुरही, ढोल, दमौ, हुड़का, थाली आदि बजाते जाते हैं।

(3) राजस्थान का लोक नृत्य बहुत प्रचलित है यहाँ

(क) खेल **(ख) स्वांग** **(ग) तमासा**

(घ) लीला **(ङ) नौटंकी** **(च) घूमर**

(छ) भवई

अब ये सब नृत्य यहाँ अनेक रूपों में प्रचलित है और वेशभूषा बड़ा ही रंगीन एवं मनमोहक होता है। वर्तमान में शहरीकरण के कारण कुछ विद्यायें विलुप्त हो गई है। अरावली पर्वत शृंखला पर आदिवासी गिरिजन भीलों का लोकनृत्य 'गवरी' बहुत ही प्रसिद्ध है। गवरी, का अर्थ गौरी अर्थात पार्वती इसमें शिव को केन्द्र में रखा जाता है और चारों ओर से पारम्परिक वेश में स्वांग की तरह नृत्य करती हैं। समस्त बीकानेर के पुष्करणा ब्राह्मणों की भी बड़ी सशक्त नृत्य शैली है होली। यह, त्यौहार दस दिनों तक चलता है।

घूमर नृत्य–राजस्थान का अत्यन्त लोकप्रिय नृत्य है। यह नृत्य महिलाओं द्वारा मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। घूमर राजस्थान में प्रायः राजपूत जाति का नृत्य था। घूमर में लहंगे का घेर बहुत अधिक होता है। इस नृत्य में बार-बार गोल-गोल घूमती हैं। इस नृत्य के साथ ढोल, नगाड़ा वाद्य का प्रयोग होता है।

छाऊ नृत्य

भवई नृत्य--राजस्थान के पेशेवर लोक नृत्यों में भवई नृत्य अपनी चमत्कारिता के लिए बहुत लोकप्रिय है। यहाँ के नागा एक ही कलाकार था जो नृत्य करता था आस-पास के लोग उससे ईर्ष्या करने लगे नतीजा यह हुआ की नागा की देखा-देखी छाकड़, ढोली, डागी कुमाक, भील, नायक, तेली, चमार आदि जातियों में भी इस नृत्य में उतर पड़े।

घूमर

(4) छाऊ नृत्य भी अत्यन्त रोचक नृत्य है इसकी शैली अलग-अलग राज्यों से जुड़ी है जैसे (क) सरायकेला (ख) मयूर भंज (ओडिसा) एवं पुरूलिया (प० बंगाल)। इस नृत्य में मुखौटे लगाये जाते हैं। इस नृत्य को करने वाले नर्त्तक को परिखन्डा की शिक्षा ग्रहण करना अनिवार्य होता है क्योंकि यह नृत्य आधारित हो परिखन्डा पर है परिखन्डा का शाब्दिक अर्थ इस प्रकार है (परि = ढाल), (खन्डा = तलवार)। नर्त्तक कोई या किसी भी संवाद जैसे राधा कृष्ण, चन्द्र भाग, मयूर पर नृत्य प्रस्तुत करते हैं तो भी उस नृत्य की गति परिखन्डा नृत्य जैसे ही होगी अर्थात् पैर की गति तेजी से युद्ध में बचाव की होती है।

भांगड़ा नृत्य

(5) मणिपुर का पुंगचोलम लोक नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। इस नृत्य में नर्त्तक गले में पुंग (ढोलक) लटकाये हुए उसको बजाते हुए हमला या आक्रमण तथा बचाव के पैतरों में नृत्य करते हैं। इसे खुले मैदान में ही करते हैं।

(6) केरल प्रदेश का बेलकली लोक नृत्य भी बहुत प्रसिद्ध है। यह पुरुष प्रधान ही नृत्य है। हाथों में ढाल-तलवार लिए नर्त्तक वीरभाव से नृत्य करते हैं साथ ही ढोल तुरही, झांझ आदि वाद्य बजाये जाते हैं।

(7) **पंजाब** –पंजाब का नाम लेते ही प्रसिद्ध लोक नृत्य भांगड़ा की बात आती है। यह नृत्य पंजाब का दर्पण कहलाता है, भांगड़ा नृत्य जोश से भरा होता है, देखने वाले भी जोश से भर जाते हैं। कृषि के समय वैसाखी पर्व पर ये नृत्य किया जाता है जब खेत सुनहले लगते हैं, आम वृक्षों पर लगे रहते हैं, अमरूद वृक्ष में लगे रहते हैं, नर्त्तक बहुत ही सुन्दर पोशाक में रहते हैं चमकीला लुंगी, कुरता सिर पर पगड़ी हाथ करताल जैसा एक वाद्य यन्त्र रहता है और बड़ा सा ढोल बजाया जाता है। गाँव में भाँगड़ा के गीत के भाव में कृषक की बेदना रहती है जिस मुश्किल से वह गुजर रहा होता है, पानी के नहीं बरसने के कारण बीज अंकुरित नहीं हो पा रहे हैं, विश्वास ऐसा है कि इस नृत्य के पश्चात कृषकों का दुःख दूर हो जाएगा।

(8) उड़िसा का लोकनृत्य मनमोहक होता इसमें प्रसिद्ध

लोकनृत्य है —

(क) नाग नृत्य

(ख) पल्ली नृत्य

(ग) दाश कठिया।

(9) बुन्देलखण्ड के लोक नृत्यों में

(क) ठिमराई नृत्य (विवाह आदि उत्सव पर किया जाता है।)

(ख) होली नृत्य

(ग) जवारा नृत्य (देवी गीतों के साथ भक्तजन इसे करते हैं।)

(10) झारखण्ड प्रदेश का नृत्य बहुत ही प्रसिद्ध है —

(क) करमा नृत्य (खरीफ की फसल बोये जाने के बाद अनंत चतुर्दशी और फिर रबी फसल कटने के बाद होली पर स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सभी-करमा नृत्य करते हैं।)

(ख) डोम कच –(सोन भद्र जनपद से सुदूर कैमूर की गुफाओं में ये आदिवासी न जाने कब से रहते चले आ रहे हैं ये मादल, ढोल, नगाड़ा बाँसुरी आदि बनाते हैं तथा पहले राजा के यहाँ घोड़े की सइसी किया करते थे। इनलोगों ने एक बार डोम (अस्पृश्य)जाति को छूकर-नाचते और गाते है, इन्हें लोग विवाह या कोई शुभ अवसर पर बुलाकर यह नृत्य करवाते हैं।

(11) गोआ प्रदेश के लोक नृत्य—

(क) थालो नृत्य यह नृत्य गोआनी महिलाएँ वनदेवी की पूजा करते हुए गोल-गोल घूम करती हैं।

(ख) वीरभद्र नृत्य –भगवान शिव के मानस पुत्र उत्कट वीर और प्रखण्ड ज्वालाओं के समान जाना जाने वाला वीरभद्र ढोल और ताशे के लय पर रौद्र वेश में तलवार नचाता है और वह यक्ष को जला डालता है। गोआ का यह परंपरागत नृत्य हैं।

(12) बिहार के लोक नृत्य–बिहार की अपनी संस्कृति है, यहाँ की लोककला बहुत ही सम्मुनत है। यहाँ के प्रमुख लोकनृत्य हैं—

(क) झिझिया–इन्द्र भगवान की अराधना करते हैं कि अकाल ना पड़े, स्त्रियाँ सिर पर छिद्रयुक्त घड़ा जिसके भीतर दीप जलता रहता है उसे लेकर तेजी से नाचती है।

(ख) जट-जटिन –इसमें पुरुष एवं स्त्री नृत्य करते मान-मनउल होता है।

(ग) सामा चकेवा–यह मिथिला का नृत्य है। भाई के लिए बहन करती है।

(घ) झमटा–बेतिया के थरू जनजाति में यह स्त्री एवं पुरुष मिलकर करते हैं।

(ङ) झारा–बेतिया के ही थरू जनजाति में यह पुरुष करते हैं।

(च) झरणी-यह मोहर्रम के अवसर पर मुसलमान लोग करते हैं।

इस प्रकार भारत लोक संगीत और नृत्य में अति उन्नत है। यहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ दिखती है।

प्रश्न

1. लोक किसे कहते है ? लोक नृत्य पर संबधित प्रदेश का असर किस प्रकार पड़ता है ?
2. हिमाचल प्रदेश के लोक नृत्यों का नाम और वर्णन करें।
3. राजस्थान के लोक नृत्यों का विस्तार से वर्णन करें।
4. उड़िसा के लोकनृत्यों के नाम बतायें।
5. झारखण्ड एवं बिहार के लोक नृत्यों का तुलनात्मक विवेचना करें।
6. झरनी नृत्य कहाँ का है तथा यह किस अवसर पर किया जाता है ?
7. बुन्देलखण्ड तथा केरल के लोक नृत्यों के नाम बताएँ ।
8. बिहार के प्रमुख लोकनृत्यों के नाम बतायें।

❑

अध्याय–4

ताल परिचय

तबला

तीनताल–यह मुख्यतः तबले का ताल है । इस ताल में सोलह मात्राएँ होती हैं। 4-4 मात्राओं का एक-एक विभाग होता है। 1, 5, 13 मात्रा पर ताली तथा 9 मात्रा पर खाली होती है। इस प्रकार इस ताल में आमद् सलामी तोड़े तिहाइयाँ इत्यादि नाचे जाते हैं।

ठेका :

धा	धिं	धिं	धा।
×			
धा	धिं	धिं	धा।
2			
धा	तिं	तिं	ता।
0			
ता	धिं	धिं	धा।
3			

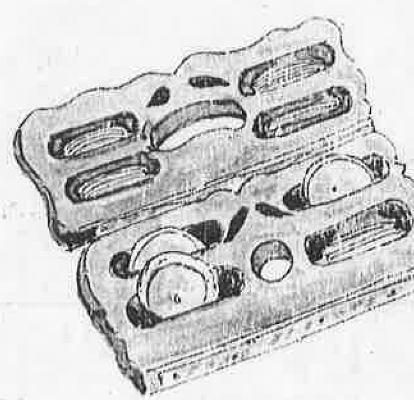

झांझर

दादरा–यह मुख्यतः तबले का ताल है। यह ताल 6 मात्राओं के योग से बना है। । खाली और । खाली सहित इस ताल में 2 विभाग होते हैं। पहली मात्रा पर ताली तथा चौथी मात्रा पर खाली होती है। इस ताल में मुख्यतः लोकगीत एवं लोकनृत्य नाचे जाते हैं। लोक धुन लोक संगीत एवं फिल्मी संगीत में इस ताल को मुख्य रूप से बजाया जाता है।

ठेका–

धा धी ना ।
×
धा तू ना ।
0

कहरवा–यह मुख्यत: तबले का ताल है। इसमें आठ मात्राएँ होती हैं। 4 मात्राओं का एक-एक विभाग-होता है। अत: इस ताल में दो विभाग 1 ताली और 1 खाली होता है। 1 पर ताली तथा 5 मात्रा पर खाली होती है। इस ताल में विभिन्न लोकगीत एवं लोकनृत्य गाए और नाचे जाते हैं। फिल्मी संगीत में भी यह ताल काफी प्रचलित है।

ठेका–

धा गे न ति ।
×
न क धि न ।
0

दुगुन–

धाधि धिधा धाधि धिधा ।
×
धाति तिता ताधि धिधा ।
2
धाधि धिधा धाधि धिधा ।
0
धाति तिंता ताधि धिधा ।
3

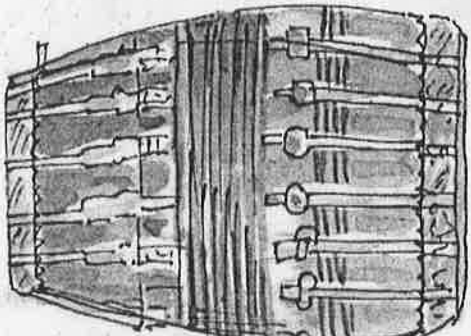

चौगुन–

धाधिंधिधा धाधिंधिधा, धातितिंता तार्धिधिधा ।
×
धाधिंधिधा धाधिंधिधा धातितिंता धाधिंधिधा
2
धाधिंधिधा धाधिंधिधा धातितिंता धाधिंधिधा
0
धाधिंधिधा धाधिंधिधा धातितिंता धाधिंधिधा
3

कहरवा : दुगुन–

धागे नति नक धिन ।
×

धागे नति नर्क धिन्।

0

घटम्

कहरवा : चौगुन–

धागेनति नकधिन धागेनतिं नकधिन।

×

धागेनति नकधिन, धागेनतिं नकधिन।

दादरा : दुगुन–

धाधी, नाधा तूना धाधी नाधा तूना

×

दादरा : चौगुन–

धाधीनाधा तूनाधाधी नाधातूना धाधीनाधा

×

तूनाधाधी नाधातूना।

प्रश्न

1. ताल की परिभाषा लिखें।
2. तीनताल का पूर्ण परिचय लिखें।
3. कहरवा ताल का दुगुन और चौगुन लिखें।
4. दादरा ताल का पूर्ण परिचय देते हुए इसका चौगुन लिखें।

अभ्यास के लिए

तीनताल–

ठेका

× 2

धा धिं धिं धा। धा धिं धिं धा

× 3

धा ति ति ता। ता धि धि धा।

ततकार, ठाह लय–

ताऽ थेई थेई तत्। आऽ थेई थेई तत्।

× 3 2

ताऽ थेई थेई तत्। आऽ थेई थेइ तत्।

दुगुन लय–

ताऽथेई थेईतत् आऽथेई थेईतत्

×

ताऽथेई थेईतत् आऽथेई थेईतत्

2

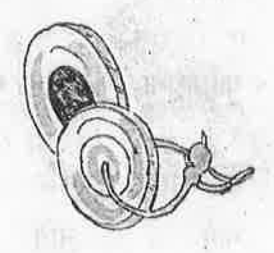

मंजिरा

ताऽथेई थेईतत् आऽथेई थेईतत्

0

ताऽथेई थेईतत् आऽथेई थेईतत्

3

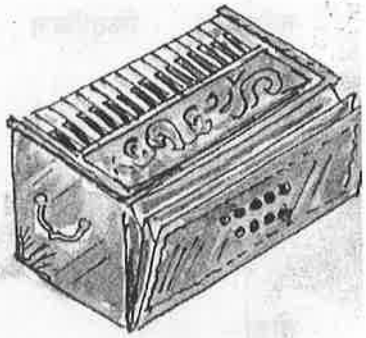

हारमोनियम

तत्कार, पहला प्रकार–

ताथे ईत ताऽथेई थेईतत आथे ईत ताऽथेई थेईतत्

× 3

ताथे ईत ताऽथेई थेईतत आथे ईत ताऽथेई थेईतत्

0

तत्कार, दूसरा प्रकार–

ताऽऽत्रि धिऽऽन्न ताऽथेई थेईतत ।

×

आऽऽत्रि धिऽऽन्न ताऽथेई थेईतत ।

2

ताऽऽत्रि धिऽऽन्न ताऽथेई थेईतत ।

0

आऽऽत्रि धिऽऽन्न ताऽथेई थेईतत ।

3

सलामी तोड़ा–

ताऽ थेई थेई तत । ताऽथेई थेईतत आऽथेई थेईतत

× 3

ताऽ थेई थेई तत । ताऽथेई थेईतत आऽथेई थेईतत

×

ताऽऽत् तऽऽत् ताऽथेई थेईतत् ।

2

आऽथेई थेईतत् तऽऽत् तऽऽत् ।

0

थेई याथे ईया त्राम ।

3

ततत थाथेई थेइतत आऽथेई थेईतत

तिगधाऽ दिगादिग थेईत्राम ।

आमद तोड़ा–

कुटटकु टटकुकु शरीकुकु थरीकिण ।

0

ककिणक	किताकिण	किताकिण	खिरकिट।					
2								
ताऽथेई	ततथेई	आऽथेई	ततथेई					
0								
थेईयथे	ईयथेई	थेई थेई	तिगधाऽदिगदिग थेईत्राम			धा		
3						×		

तोड़ा–

ताऽथेई	तत	थेई।	आऽ	थेई	तत	थेई।		
×			2					
थेई	थेईताऽ	थेई।	थेईताऽ	थेई	थेई	तत	तत।	
×			3					
ताऽ	ऽऽतत्	तत्।	ताऽथेई	थेईतत्	आऽथेई –			
थेईतत्।	तिगधा	दिगदिग	थेई	त्राम	थेईऽऽ			
	0							
तिगधादिगादिग		थेईग्राम	थेईऽऽ					
		3						
तिगधादिगादिग		थेईग्रा।	र्ता					
			×					

कृष्ण-लास्य (तीन ताल)–

×छुम छुम	छन	नन	नाऽचत।
2 गिरधर	गोपी	संग	लेले।
0 हाऽथक	नकपिच	काऽरीऽ	भाऽगत।
3 इत	उत	राधा	प्यारी।
× धरनाहिं	पाऽवत	कृष्णमु	राऽरीऽ।
2 ताऽथेई	थेईतत्	आथेई	थेईतत्।
0 त्राम तत	थेई तत्	थेइऽऽ	त्रामतत्।
3 थेईतत	थेईतत्	त्रामतत	थेईतत।

टुकड़ा–

×ताऽ	थेई	तत्	थेई।	आऽ	थेईऽ
				2	
तिगधाऽ		दिगदिग		थेईत्राम	थेईऽऽ
0				3	
तिगधाऽ		दिगदिग।		थेईत्राम	थेईऽ

तिगधाऽ　　　दिगदिग　　　थेईत्राम　थेईऽ

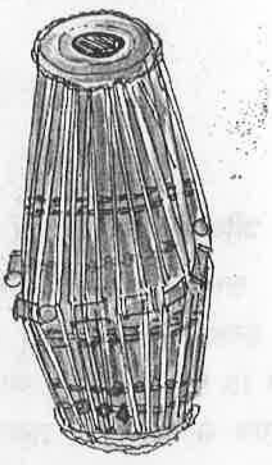

टुकड़ा–

× ताऽथेई　　थेईतत्　　आथेई　　थेईतत् ।

थेई　थेई　थेई　त्राम।　थेई　तत　थेई　त्राम ।

0　　　　　　　　2

थेई　ऽऽ　थेई　त्राम ।　थेई　त्राम　थेई　तत ।

3　　　　　　　　×

थेई　त्राम　थेई　ऽऽ ।　थेई　थेई　त्राम　थेई

2　　　　　　　　0

थेई　तत　थेई त्राम ।　ता

3　　　　　　　　×

टुकड़ा–

× तततत्　　थूनथून　　तिगधादिगिदिगि　　थेई ।

2 तततत्　　थूनथून　　तिगधादिगिदिगि　　थेई ।

0 तततत्　　धूनधून　　तिगधादिगिदिगि　　थेई ।

3 तिगधादिगिदिगि　　थेईतिगधा　　धिगिधिगिथेई

तिगधादिगिदिगि　　थेई　　दिगिदिगिथेई

प्रश्न

1. ततकार् की परिभाषा देते हुए इसके प्रकारों को लिखें ।
2. आमद किसे कहते हैं ? तीनताल में एक आमद् लिखें ।
3. टुकड़ा को तीनताल में लिपिबद्ध करें ।

❑

अध्याय–5

बिरजू महाराज

■ जीवन परिचय एवं योगदान :

लखनऊ घराने के प्रसिद्ध नर्त्तक अच्छन महाराज के सुपुत्र बिरजू महाराज का असली नाम बृजमोहन मिश्र है। इनका जन्म 4 फरवरी 1938 में हुआ। बाल्या काल से ही नृत्य की शिक्षा अपने पिता से ली। लेकिन जब आप 10 वर्ष के थे तभी आपके पिता का निधन हो गया और तत् पश्चात् आपने नृत्य की शिक्षा अपने चाचा शंभु महाराज से ली। आप लखनऊ घराने के सुप्रसिद्ध प्रतिनिधि कलाकार के रूप में माने जाते हैं।

बिरजू महाराज

अपने परिशुद्ध ताल और भावपूर्ण अभिनय के लिए प्रसिद्ध बिरजू महाराज ने एक ऐसी शैली बिकसित की है जो उनके दोनों चाचाओं और पिता से संबंधित तत्वों को सम्मिश्रित करती है। आपके पदचालन की सक्षमता और मुख एवं ग्रीवा संचालन की परख एवं चलन दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। बिरजू महाराज ने राधाकृष्ण प्रसंगों के वर्णन के साथ विभिन्न सामाजिक तथा पौराणिक विषयों पर स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए नृत्य की शैली

में नूतन प्रयोग किए हैं। आपको अनेक सम्मान से नवाजा गया है जिनमें पद्मविभूषण, कालीदास पुरस्कार लता मंगेशकर पुरस्कार, सोवियत संघ द्वारा नेहरू फेलोशिप, ...इत्यादि प्रमुख हैं। बिहार सरकार द्वारा वर्ष 2013 में राज्य कला पुरस्कार के राष्ट्रीय पुरस्कार के श्रेणी में संगीत में महती योगदान के लिए आपको सम्मानित किया गया है।

रचनात्मक प्रतिभा के आप धनी कलाकार हैं। ठुमरियों की रचना एवं भाव प्रदर्शन में आप अद्वितीय हैं। आपके अनगिनत शिष्य-शिष्याएँ भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त कलाकार हैं। दिल्ली के प्रतिष्ठित कथक केन्द्र स्थान के आप लंबे समय तक निदेशक रहे हैं।

आपके नेतृत्व में कथक पूरे देश में एक नए रूप में स्थापित हुआ है। वर्त्तमान में आपके द्वारा दिल्ली में **कलाश्रम** नामक संस्था की स्थापना की गई है जो, मुख्य रूप से कथक नृत्य के प्रशिक्षण और शोध में कार्यरत है। आपने संगीत के क्षेत्र में लयकारियों पर महती कार्य किया है। बोल परण के अतिरिक्त आपने मात्र गिनतियों का प्रयोग कर लयों की बहुत ही अच्छी एवं कठिन संरचना की है जो देखने और सुनने में जितना सरल लगता है विद्वानों के लिए उतना ही जटिल है। नृत्य को आम जीवन से जोड़कर आपने इसे जनसाधारण के लिए सुग्राह्य बनाया है।

बिरजू महाराज एक निपुण गायक नर्तक एवं कवि भी हैं। आप वाद्ययंत्र बजाने में भी सिद्धहस्त हैं। आपने नृत्य के कई कार्यक्रमों में पखावज बजाकर संगत भी की है। आपने फिल्मों में भी नृत्य निर्देशन किया है एवं कथक नृत्य को फिल्मों में प्रतिष्ठा दिलाई है। इतनी ऊँचाइयों को छूने के बावजूद आपका व्यक्तित्व बहुत नम्र एवं सरल है। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु होकर अपनी नवीन कल्पनाओं द्वारा नृत्याकाश में उज्ज्वल नक्षत्र की भाँति चिरकाल तक जगमगाते रहे।

प्रश्न

1. पं०बिरजू महाराज किस घराने के नर्त्तक है ?
2. नृत्य करने के अलावा महाराज जी और कौन से वाद्ययंत्र बजाते हैं ?
3. संगीत में नृत्य के क्षेत्र में पं० बिरजू महाराज के योगदान का वर्णन करें।
4. महाराज जी को कितने सम्मान से नवाजा गया है ?

यामिनी कृष्णमूर्ति

यामिनी कृष्णमूर्ति

भारतीय सांस्कृतिक विरासत के पुरूज्जीवन के परिपेक्ष्य में यामिनी कृष्णमूर्ति आज परम्परागत शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम की श्रेष्ठ नर्त्तकियों में हैं। सन् 1957 में उन्होंने अपना प्रथम कार्यक्रम प्रस्तुत किया और यहीं से उन्हें प्रसिद्धि मिलनी शुरू हो गई। नृत्य मुद्राओं की परिपूर्णता अंगशुद्धि, विशिष्ट और प्रभावकारी अभिनय एवं अभिव्यक्ति अद्‌भुत लयज्ञान तथा शिखर पर पहुँचा दिया। आप सन् 1950 से पाँच वर्षों तक कलाक्षेत्र में रहीं और श्रीमति रूक्मिणी अरूण्डेल के निर्देशन में नृत्य सीखा। बाद में गामिनी को सरकारी छात्रवृत्ति मिली जबकि उन्होंने बाल सरस्वती के गुरू कांजीवरम् एलप्पा पिल्लै और गुरू किटप्पा पिल्लै से भरतनाट्यम सीखा। उन चार वर्षों में यामिनी ने– वेदात्तम लक्ष्मीनारायण शास्त्री पशुपति वेणुगोपाल, कृष्णशर्मा तथा अन्य से कुच्चीपुड़ी भी सीखा। अपने

उत्कृष्ठ प्रदर्शन के साथ आपने भारत भर का भ्रमण किया। आपने अपना कर्मक्षेत्र दिल्ली कों बनाया और यहीं से आप सभी अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में नृत्य प्रस्तुत करती रही। आपने पाकिस्तान, नेपाल, वर्मा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथ यूरोपीय देशों की यात्रा की।

कुच्चीपुड़ी नृत्य में भी आपका योगदान उल्लेखनीय है। आपने गुरू पंकज चरणदास--से ओडिसी नृत्य भी सीखा तथा 'पंचकन्यां' नृत्य पेश किया। आपकों भारत सरकार द्वारा सन् 1968 में पद्मश्री के अलंकरण से विभूषित किया गया। भरतनाट्यम नृत्य में आपका योगदान उत्कृष्ट है।

प्रश्न

1. नृत्यांगना यामिनी कृष्णमूर्त्ति के गुरू कौन थे ?
2. यामिनी कृष्णमूर्त्ति को किस-किस अलंकारण से नवाजा गया ?
3. क्या आप भरतनाट्यम नृत्य सीखना पसन्द करेंगी ?
4. यामिनी कृष्णमूर्त्ति का जीवन परिचय एवं नृत्य में योगदान को वर्णित करें

गुरु केलुचरण महापात्र

गुरु श्री केलुचरण महापात्र भारतीय शास्त्रीय नृत्य की एक महान हस्ती के रूप में जाने जाते हैं। गुरू केलुचरण महापात्र ओडिसी शास्त्रीय नृत्य का एक अलग स्वरूप लेकर 20 वीं शताब्दी में उभरे।

गुरु श्री केलुचरण महापात्र

इनका जन्म 8 जनवरी 1926 ई० में जगन्नाथ पुरी स्थित रघुराजपुर गाँव में हुआ था। बाल्यवस्था से ही गाँव में गोटिपुआ' (लड़का-लड़की वेश में नृत्य करते) नृत्य मंडली में नृत्य किया करते थे। तदोपरान्त् स्व० मोहन सुंदर देव गोस्वामी के नृत्य दल में शाामिल हो गए, इस दल में शामिल होकर सिर्फ 12 वर्ष की उम्र में विभिन्न भूमिका में अभिनय प्रदर्शित करने लगे, इसके बाद केलुचरण जी केलुचन्द्र पटनायक के उड़िया रंगमंच में कार्य करना आरंभ किया इन्होंने अन्नपूर्णा रंगमंच के बी ग्रुप में भाव एवं अभिनय गुरु के रूप में काम किया। इसी मंच पर कार्यरत रहते हुए इन्होने गुरु पंकज-चरण दास, ध्रुवचन्द्र सिंह और गुरु दयाल शरण जैसे गुरुजनों से नृत्य शिक्षा प्राप्त की तदोपरान्त गुरू के रूप में ख्याति प्राप्त करने लगे।

गुरू केलुचरण महापात्र ने ओडिसी नृत्य में बहुत सारा प्रयोग किया और सफलता प्राप्त की देश-विदेश में इनकी ख्याति फैलने लगी। सर्वप्रथम ओडिसा में गुरू केलुचरण महापात्र को पद्मविभूषण से नवाजा गया। सन् 1935 से 2004 तक ये कोरियोग्राफी करते रहे 7 अप्रैल 2004 को भुवनेश्वर में इनका देहान्त हो गया। आज देश-विदेश में इनके अनेक छात्र छात्राएँ इसको फैला रहे है। यह ओडिसी नृत्य जगत की अपूर्णीय क्षति थी।

प्रश्न

1. क्या केलुचरण महापात्र को बाल्यअवस्था से नृत्य में रूचि थी ?
2. गुरू केलुचरण महापात्र का जन्म कब हुआ था ?
3. गुरू केलुचरण महापात्र को कौन सा पुरस्कार मिला क्या पहले भी किसी को ओडिसी नृत्य में यह पुरस्कार मिला है।
4. गुरू केलुचरण महापात्र के कौन-कौन गुरू जन थे ?
5. गुरू केलुचरण महापात्र ने कब से कोरियोग्राफी कार्य आरंभ किया था तथा इनकी मृत्यु कब और कहाँ हुई?

❑

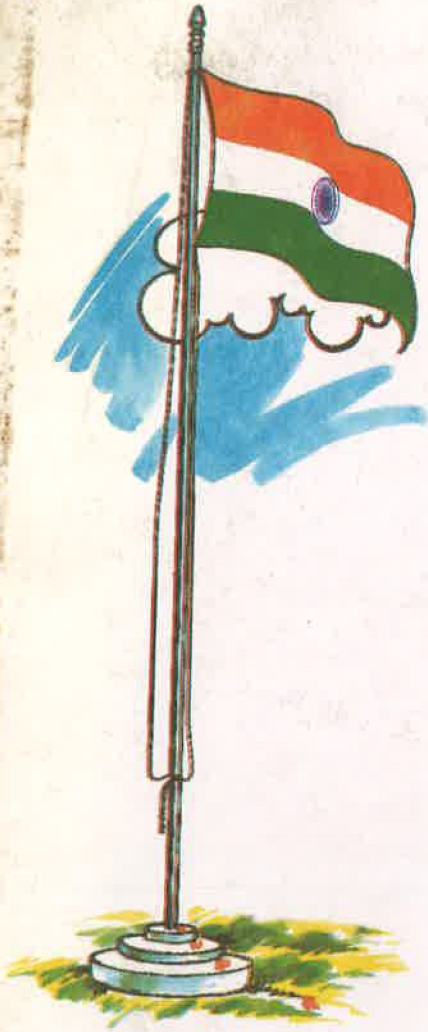

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना-1
BIHAR STATE TEXT BOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

मुद्रक :-बब्लू बाईंडिंग हाउस, पटना कोल्ड स्टोरेज, शाहगंज पटना-800 006